

बाँवरे क्योँ गबराता है

बाँवरे क्योँ गबराता है
श्याम शरण में आज्जा ये सारे कष्ट मिटाता है
बाँवरे क्योँ गबराता है

अपने जब होते पराये ये अपना बन के आये,
थाम ले ये हाथ पल में साथी हारे का कहाए ,
हो इनके होते धीर क्योँ खोता क्योँ नीर बहाता है
बाँवरे क्योँ गबराता है...

है सुख दुःख खेल इसी के जैसे चाहे ये खिलाये,
देख के दुःख में भगत को चैन इसको भी न आये ,
रखता लाज सदा भगतो की दोडा आता है ,
बाँवरे क्योँ गबराता है

तू कर दे तन मन अर्पण करदे चरणों में समपर्ण,
श्याम संग प्रीत लगा ले सफल जीवन ये बना ले
देख भाव भगतो के पल में रीज ये जाता है
बाँवरे क्योँ गबराता है

<https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/19209/title/banvare-kyu-gabarata-hai>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |